ISSN - 2348-2397
APPROVED UGC CARE
SHODH SARITA
Vol. 7, Issue 28, October-December 2020
Page Nos. 18 - 21
AN INTERNATIONAL BILINGUAL PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

ऑनलाईन क्लास का प्रचलन और प्रभाव

❒ प्रो. बनवारी लाल जैन*
डॉ. अमिता जैन**

शोध सारांश

वैश्विक महामारी कोरोना वायरस (कोविड–19) ने विश्व में आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक जगत् में हलचल मचा दिया। भारतीय शैक्षिक जगत् में ऑनलाईन क्लास का कलचर तेजी से प्रसारित हुआ है। बहुविधि ज्ञान, क्लास कंटेट के नवीन स्रोत, कक्षा प्रेजेंटेशन, नोट्स शेयर आदि तकनीक का उपयोग तेजी से बढ़ा है। नये–नये आइडिया, नवाचार, नूतन प्रयोग, ऑनलाईन क्लास में प्रचारित हुए है। इस प्रकार की क्लास से सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही प्रभाव देखने में आ रहे हैं। ऑनलाईन क्लास से सकारात्मकता कैसे बढ़ावे तथा दुष्प्रभावों व कमजोर पक्ष को कैसे दूर करें, इस विषय पर चिन्तन किया जाना आवश्यक है। ताकि ऑनलाईन क्लास का भविष्य में उपयोग सकारात्मक रूप में हो सके।

Keywords : बहुविध ज्ञान, ज्ञान के नवीन स्रोत, कम व्यय, वरदान, प्रदूषण, पंगुता, भोग प्रवृत्ति, जीवन शैली विकृत, अनुशासन हीनता।

प्रस्तावना :

ऑनलाईन ज्ञान और विचार की तीव्र गति आज इंटरनेट के माध्यम से बहुत तेजी के साथ सम्प्रेषित हो रहे हैं। ज्ञान और विचार का सम्प्रेषण वैश्विक स्तर पर प्रसारित हो रहा है। अनेक सेमीनार, कार्यशाला, सिम्पोजियम, चर्चा, संवाद, व्याख्यान, वाद–विवाद प्रतियोगिता आदि का राज्य, राष्ट्र व वैश्विक स्तर के लोग सहभागिता व क्रियान्वयन में भाग ले रहे हैं। एक देश के नवाचारों, व्यवसाय और मॉडल से आसानी से परिचित हो सकते हैं, उसका अनुप्रयोग कर सकते हैं। वैश्विक महामारी कोविड–19 से दुनिया तेजी से बदल रही है। नया ज्ञान, नवीन विचार, नूतन तकनीकी का विस्तार बढ़ता जा रहा है। तकनीकी गुणात्मक गति की तीव्रता के साथ आगे बढ़ रही है। स्टार्ट अप कम्पनियां लगातार चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़ रही है। मोबाईल फोन व इंटरनेट कनेक्विटी यदि समुचित हो तो ज्ञान और विचार के क्षेत्र में हम बहुत आगे कदम बढ़ाने वाले होंगे। हमारे ज्ञान और विचार से दुनिया बदलने का अवसर तेजी से बढ़ा है।

ऑनलाईन क्लास के सकारात्मक प्रभाव :

⏭ **बहुविध ज्ञान**– ऑनलाईन क्लास से अनेक प्रकार से ज्ञान प्रदान किया जा सकता है। ऑनलाईन क्लास में प्रस्तुतीकरण, प्रदर्शन, आंकड़े, ग्राफ, मानचित्र, रेखाचित्र, सारणी आदि से ज्ञान को विविध रूपों, विविध तरीकें के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है। गूगल पर स्थित ज्ञान को खोजकर ऑनलाईन क्लास में दिये जाने की सुविधा होने से विद्यार्थियों को बहुविध ज्ञान की उपलब्धता रहती है। इस क्लास में सारी जानकारी प्रत्यक्ष में भी दिखाई जा सकती है। शिक्षा के बहु–उद्देश्यी स्वरूप समझने में सार्थक है और विविध प्रकार की ज्ञानवृद्धि करने का सशक्त माध्यम है।

⏭ **ऑनलाईन क्लास के नवीन स्रोत**–ऑनलाईन क्लास लेने के कुछ साधन है, जैसे जूम एप, हैंगआउट एप, टीम एप, इन्स्टाग्राम एप, स्काइप एप, गूगल क्लास रूप आदि अनेक एप है तथा फेसबुक लाइव, यू–ट्यूब, वीडियों, ऑडियों, वाट्सअप आदि इस क्लास हेतु अनेक स्रोत उपलब्ध है। कम्प्यूटर, लेपटॉप, टेबलेट, स्मार्ट फोन आदि अनेक इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के आविष्कार से शिक्षा के इस क्षेत्र में आशातीत प्रगति हुई है। नवीनतम संसाधनों के विस्तार से इस क्षेत्र में आश्चर्यजनक क्रांति हुई है। ऑनलाईन क्लास के इन स्रोतों से दूर रहने वाले शिक्षार्थियों को अधिक लाभ हो रहा है। ऑनलाईन क्लास के समय अनेक फक्शन करने से विद्यार्थियों को उसकी उपयोगिता बढ़ जाती हैं जटिलतम समस्याओं का समाधान भी इसके नवीनत स्रोतों से किया जा सकता है। एन.सी.टी.ई. ने भी गूगल ड्राइव पर अपनी किताबें अपलोड की है व यू.जी.सी. ने भी INFLIBNET पर पुस्तकें व शोध पत्रिकाओं को ऑनलाईन उपलब्ध कराया

*विभागाध्यक्ष
**सहायक आचार्या, शिक्षा विभाग, जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

है। यहां साइंस, ऑटर्स, कॉमर्स आदि सभी विषयों की पुस्तकें उपलब्ध करायी है।

- **ज्ञान का प्रकाश**– ये कक्षाएं शिक्षार्थियों को 'रेगिस्तान में पानी' उपलब्ध होने की भांति प्रतीत होती है। वह ऑनलाईन क्लास से अपनी अशिक्षा, अज्ञान व निरक्षरता को मिटा सकता है। ज्ञान के क्षेत्र में विविध प्रकार की ऑनलाईन क्लास उजाला, प्रकाश व रोशनी की तरह कार्य कर रही है। ज्ञानराशि से वंचित, शिक्षण सुविधाओं के नितान्त अभाव, आर्थिक तंगी वाले बालकों में ज्ञान का प्रस्फुटन करने में सार्थक है।
- **समय नियोजन**– शिक्षा संस्थानों में आने–जाने, कक्षा में बैठने, बस का इन्तजार करने का समय बचाया जा सकता है। उस समय को वह अपने अध्ययन, योग, व्यायाम आदि में सदुपयोग कर सकता है। उसकी दिनचर्या समयबद्ध, व्यवस्थित व सुनियोजित हो सकती है। आज के विद्यार्थियों के पास स्वाध्याय के लिए समय का अभाव होता है। इस प्रकार की क्लास से समय की काफी बचत हा जाती हैं समय का सदुपयोग जीवन की सबसे बड़ी सफलता है।
- **विश्वव्यापी समस्या या प्राकृतिक आपदाएं**– ऑनलाईन क्लास प्राकृतिक आपदाएं के समय संचालित किया जाना उपयोगी है यथा भयानक चुनौति पूर्ण कोराना वायरस (कोविड–19) के समय इस प्रकार की कक्षाएं सार्थक, उपयोगी व लाभकारी है। अधिक वर्षा, सर्दी व गर्मी का मौसम होने पर ऑनलाईन क्लास की जा सकती है। कर्फ्यू, हड़ताल, आंदोलन, धरने, रास्ता जाम होने की स्थिति में भी यह क्लास सार्थक सिद्ध हो सकती है। वैश्विक महामारी, प्राकृतिक आपदा, भूकम्प, सुनामी, तापमान का उच्च व निम्न होना, युद्ध, संघर्ष, प्रकोप, बीमारियां आदि के समय ऑनलाईन क्लास की प्रभावकारिता सार्थक हो सकती है।
- **अपार धन व्यय रोकने**– ऑनलाईन क्लास होने पर शिक्षण संस्थान अधिक स्थापित करने की आवश्यकता नहीं होगी। बढ़ती छात्र व शिक्षा संस्थान की समस्या दूर की जा सकती है। कक्षा–कक्ष हेतु भौतिक संसाधनों, उसके निर्माण, उसके लिए भूमि आदि पर होने वाला व्यय कम हो सकेगा। पलायन करने वाले, लोहा पीटा, घुमक्कड़ आदि जाति के बच्चों को जागरूकता, साक्षर शिक्षा दी जा सकती है। इस प्रकार के बालकों के लिए बस, जीप, गाड़ी, मोटर साईकिल से आने–जाने का व्यय समाप्त होगा और शिक्षा को उनके अनुकूल समय पर प्रदान किया जा सकता है। कुछ शिक्षा संस्थान धनार्जन की दृष्टि से चलते हैं, छात्रों से पुस्तक, ड्रेस, बस, भ्रमण, गतिविधियां आदि के नाम से फीस वसूली करते हैं, वह इस प्रकार की क्लास के माध्यम से रोके जा सकते हैं। श्रम, समय तथा धन की बचत सर्वाधिक होती है।
- **सुगम तरीका**– वर्तमान युग में शिक्षा प्रदान करने का यह बहुत आसान तरीका है। इसमें घर बैठे शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। स्मार्टफोन से ही ऑनलाईन क्लास ली जा सकती है। ऑनलाईन विविध साइट से शिक्षण सामग्री वीडियों, यू–ट्यूब, एप, ऑडियों, फोटोग्राफ, ई–बुक्स आदि के परिचालन से शिक्षण कराया जा सकता है। परस्पर विचार विनिमय, सूचनाओं का आदान प्रदान, ज्ञान वृद्धि, विचार–विमर्श, प्रतियोगिता, गतिविधियां आदि को सरल तरीके से आयोजित किया जा सकता है। यह क्लास छोटे से लेकर विश्व स्तर पर आयोजित की जा सकती है। आधुनिक शिक्षार्थी के व्यक्तित्व का बौद्धिक विस्तार किया जा सकता है।
- **अनुपम साधन**– शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाईन क्लास संचार का एक अनुपम साधन है। सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक प्रगति से ऑनलाईन प्रक्रिया ने आशातीत प्रगति की है। अब शिक्षा के अनछूहे पहलुओं को भी स्पर्श किया है। शिक्षा को बिना शिक्षा संस्थान में जाकर भी शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए अनेक ऑनलाईन क्लास अलग–अलग एप से तथा ऑनलाईन स्रोतों से प्राप्त कराने की सुविधा है।
- **छात्रों के लिए वरदान**– ऑनलाईन क्लास गाँव, ढ़ाणियों, कच्ची बस्तियों, पिछड़े क्षेत्रों, मलिन, दिव्यांग, बालिका, बालक, अपंग, अभाव ग्रस्त, पिछड़े, दूरदराज पहाड़ी इलाके में रहने वाले शिक्षार्थियों को मोबाईल से क्लास लेने में चमत्कारी घटना है। कोई भी शिक्षार्थी सस्ता मोबाईल लेकर मन चाहे क्षेत्र, स्थान पर बैठकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है। व्यापार–व्यवस्था, समाचार, मनोरंजन खेलकूद आदि में तो लाभदायक है। लेकिन अब शिक्षा के क्षेत्र में भी उपयोगी है।
- **शिक्षण समुन्नत**– आज का युग विज्ञान व तकनीकी का है। कोविड–19 महामारी से यह समय अधिक विज्ञान व तकनीकी का बन गया है। तकनीकी से जीवन में कम शक्ति, श्रम व धन लगता है तथा उसका लाभ अनेक क्षेत्रों में उठाया जा सकता है। कोविड–19 वैश्विक महामहारी में ऑनलाईन क्लास में शिक्षण को नवीन व समुन्नत बनाने का भरसक प्रयास किया जा रहा है। शिक्षण दृश्य, श्रव्य तथा दृश्य–श्रृव्य तीनों माध्यमों से ज्ञान में अभिवृद्धि, प्रसार व संचयन का सफल प्रयोग है। शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन सम्प्रत्यय जुड़ गया है जिसमें तीन प्रकार से शिक्षण को आदान–प्रदान तथा विनिमय का कार्य सम्पादित करने की

व्यवस्था हैं। पत्राचार शिक्षा, दूरस्थ शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा के साथ औपचारिक शिक्षा के शिक्षण में ऑनलाईन क्लास ने आश्चर्यजनक प्रगति की है। शिक्षण रीतियों के अभिकल्पन एवं मूल्यांकन के लिए व्यवस्थित उपागम है।

ऑनलाईन क्लास के नकारात्मक प्रभाव :

- **संस्कृति का प्रदूषण**—ऑनलाईन क्लास पाश्चात्य देशों की संस्कृति का प्रचलन है। तख्ती और खडिया, स्लेट और बस्ती, कापी और पेन्सिल, पेन से शिक्षण प्राप्त करने वाली संस्कृति को ऑनलाईन प्रदूषित कर देगी। हमारी संस्कृति का शिक्षण ज्ञान, भाव व क्रिया तीनों पक्षों का विकास करता है। ऑनलाईन क्लास मात्र ज्ञानात्मक विकास तक ही सीमित है। हम शिक्षा के एक पक्ष का ही अर्जन करा सकते है। जबकि हमारी शिक्षा का उद्देश्य बालक का चहुँमुखी, सर्वतोमुखी, सर्वांगीण विकास करना है। यह ऑनलाईन क्लास सस्ता व सुलभ साधन हो सकता है लेकिन संस्कृति को प्रदूषण करने वाली सामग्री भी इन्हीं के माध्यम से परोसी जाती है। जैसे इंस्टाग्राम पर बॉयज लोकर रूम से 15 से 19 वर्ष के प्रतिष्ठित स्कूल व घरों के बच्चे अनेक एपों में क्लास के मध्य अश्लील वीडियों, अश्लील चित्र व अश्लील सामग्री भी परोस दी। कक्षा में जो उत्साह, उमंग व उल्लास हमारी भारतीय क्लास में है वह इस प्रकार की क्लास में उपलब्ध होना नामुकिन है। ऑनलाईन क्लास मर्यादा विहीन संस्कृति, मर्यादा विहीन आचरण, खुला प्रदर्शन को महत्त्व देती है। मानवीय संवेदना, उदात्त आचरण, समाज सेवा, परोपकार, सद्भावना उदारता आदि का ह्रास इन ऑनलाईन क्लासों से परिणाम के रूप में होगा। **जड़ता व पंगुता का विकास**— ऑनलाईन क्लास लेने वाले विद्यार्थियों में फोन से चिपकने, कोई काम नहीं करने, मोबाईल में स्वच्छन्द विचरण करना, किसी भी साइड को खोलकर बैठ जाना। अनुपयोगी गतिविधियां में संचालित होना। इससे जड़ता, अकेलापन, पंगुता के दोष बढ़ने की सम्भावना अधिक है। लगातार श्रवण से कान कमजोर व बहरापन आने की सम्भावना तथा मस्तिष्क में चिढ़चिढ़ापन आ जाता है। इसकी बुरी लत के परिणाम वर्तमान में नहीं दूरगामी रूप में दृष्टिगोचर होंगे। ये लुभावने, आकर्षक एवं मोहक है। शिक्षार्थी इसमें अपने आपको खो देता है, उसे यह भान नहीं रहता है कि मैं इससे कितने समय तक चिपका रहा। सामने नहीं होने पर ये दिखावा मात्र होंगे।
- **बेरोजगारी का नया सूत्रपात**— ऑनलाईन शिक्षा से मानवीय संसाधनों की कमी होगी। कम शिक्षकों से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने का प्रचलन बढ़ेगा। तकनीकी संसाधनों पर अधिक खर्च होगा और मानवीय संसाधनों पर कम खर्च होगा। बेरोजगारों की संख्या पहले ही बहुत अधिक संख्या में है। ऑनलाईन क्लास से सीमित शिक्षकों से शिक्षा संस्थान अध्ययन कार्य करने में सिद्धहस्त होंगे। जिससे घटते मानवीय संसाधन बेरोजगारी को बढ़ायेंगे व शिक्षा की गुणवत्ता में भी गिरावट लाने में दृष्टिगोचर होंगे।
- **भोग प्रवृत्ति से ग्रस्त**— ऑनलाईन क्लास में विद्यार्थी को सम्पूर्ण रूप में अवलोकित नहीं कर पाने के कारण शिक्षार्थी भौतिकवादी प्रवृत्ति से ग्रस्त होंगे। नयेपन की होड़ में फैशन परस्ती का मोह बढ़ना, खुलेपन के प्रतिबंध हटना, मद्यपान व धूम्रपान के शिकार होना, सौन्दर्य प्रसाधनों से आकर्षक होना, तड़क—भड़क, अकर्षक व कामवासना जाग्रत वस्त्रों का प्रचलन, धनार्जन का नाजायज दुरूपयोग आदि को बढ़ावा मिलेगा। इस प्रकार विकसित कुप्रवृत्तियों से ऑनलाईन क्लास से रोकना संभव नहीं है। संस्कृति व समाज को पीछे धकेलने वाली इस भोग प्रवृत्ति को आमने—सामने की कक्षा—कक्ष में ही रोका जा सकता है। भारतीय भूमि पर पाश्चात्य सभ्यता का ढांचा खड़ा करना है। समाज में बढ़ती स्वार्थ भावना, भोग विलास, अनैतिकता आदि को कक्षा—कक्ष में या विद्यालय में ही भलीभांति सिखाया जा सकता है।
- **सम्बन्धों का ह्रास**— ऑनलाईन क्लास से मानवीय सम्बन्धों व जीवन मूल्यों का ह्रास तेजी से होगा। प्रेम, भाईचारा, सद्भावना, दया, सहानुभूति, ममता, धैर्य, सहयोग, समन्वय, सामंजस्य आदि भाव शिक्षा में लुप्त हो जायेंगे। सम्बन्धों के ह्रास से चोरी, हत्या, डकैती, मारपीट, लड़ाई—झगड़े, मार—काट, अपराध, बलात्कार दिन—प्रतिदिन बढ़ेंगे। सभी मोबाईल, कम्प्यूटर, लैपटॉप में व्यस्त हो जायेंगे। किसी के पास दूसरे से सम्पर्क करने का समय नहीं होगा।
- **जीवन शैली विकृत**— भागमभाग से तो बचा जा सकताहै। दिनचर्या अव्यवस्थित, अनियोजित, असमयबद्ध रूप में हो जायेगी। देर रात तक जागना, लेट तक उठना, दिनभर आलस में रहना, खा—पीकर मोटा होना, बिना नहाये—धोये शिक्षा ग्रहण करना, घर के काम में रूचि नहीं लेना, कपड़े गंदे पहनना, शालीन व माधुर्य व्यवहार का परिवार में अभाव होना, शारीरिक व मानसिक शोषण से ग्रस्त होना। रहन—सहन, खान—पीन, उठने—बैठने, वेषभूषा, चाल—चलन आदि में कुप्रवृत्ति विकसित होगी। इन सबका अवबोध प्रत्यक्षीकरण से किया जा सकता है।
- **विकास की अंधी दौड़** —शिक्षा में ऑनलाईन कक्षा को विकास की कड़ी मान रहे हैं, जबकि यह संवेगात्मक विकास, नैतिक विकास, चारित्रिक विकास,

सामाजिक–सांस्कृतिक विकास और मूल्य के पतन का पथ है। भ्रम, संदेह, असामंजस्य, शंका बढ़ाने व उसमें पलने का विकास है। अशांति, चिंता, हिंसा के भावों में बढ़ोत्तरी होगी। सामाजिक व सांस्कृतिक मूल्यों का विकास अन्तर्सम्बन्ध में निहित होता है। प्रत्यक्ष व सामने की शिक्षा से ही मूल्यों का विकास किया जा सकता है।

- **अनुशासनहीनता का पनपना**– गुरू–शिष्य परम्परा वैसे ही समाप्त हो गई। थोड़ी बहुत बची है तो इस प्रक्रिया से समाप्त हो जायेगी। पाश्चात्यकरण की दुष्प्रवृत्ति, समाज का प्रदूषित माहौल, राजनीति का कुप्रभाव, दोषपूर्ण शिक्षा व्यवस्था सर्वत्र व्याप्त है। सुकोमल मस्तिष्क पर इस प्रकार की क्लास से अनुशासनहीनता का प्रभाव परिलक्षित होगा। विनयी, परिश्रमी, कर्त्तव्यनिष्ठ, लग्नशील, शालीन, सदाचारी, आज्ञाकारी, विनीत, श्रमनिष्ठ, मेहनती के लक्षण विद्यालय क्लास से ही संभव है। घर के दुर्व्यवहारों से पीड़ित होकर कुसंगति में पड़ने की सम्भावना बढ़ जाती है।
- **व्यावसायिक प्रशिक्षण का अभाव**– ऑनलाईन क्लास से सैद्धान्तिक ज्ञान दिया जा सकता है, उसका प्रशिक्षण, व्यावहारिक ज्ञान, प्रैक्टिकल तो नियमित कक्षा–कक्ष में ही संभव है। इस प्रकार की कक्षाएं से छात्रों में अपने व्यवसाय के प्रति हुनर, कौशल, दक्षता, योग्यता विकसित नहीं हो सकती। अभ्यास, प्रयोग, क्रियाशीलता का कार्य इन क्लासों से देना असंभव है।
- **पाठ्य सहगामी क्रियाएं की क्रियान्विति का अभाव**– ऑनलाईन क्लास से कोर्स या सिलेबस का अध्ययन कराया जाना संभव है, लेकिन भावात्मक व क्रियात्मकपक्ष का विकास करने वाली शारीरिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक क्रियाएं उतने प्रभावी ढंग से किया जाना संभव नहीं है। शिक्षा में सर्वांगीण विकास केवल मानसिक विकास के रूप में उभर कर आयेगा।
- **इंटरनेट/संसाधनों का अभाव**– भारतमें 24% ही इंटरनेट की सुविधा उपलब्ध है, इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है लेकिन एनड्रोय फोन नहीं है, फोन व इंटरनेट सुविधा उपलब्ध है तो आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, हमें विचार करना होगा कि जिन विद्यार्थियों के पास इंटरनेट, फोन व आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है, व शिक्षा कैसे प्राप्त करेंगे। अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश में शिक्षा का अभाव है उस क्षेत्र तक संसाधनों के बिना ऑनलाईन क्लास कैसे की जा सकती है।

निष्कर्ष :

ऑनलाईन क्लास का प्रचलन लाभ व हानि दोनों पक्षों से जुड़ा हुआ है। संकट, परेशानी, समस्या, आपदा, महामारी के समय ये क्लास सार्थक है। ज्ञान को विविध रूपों में समझाने, नवीनस्रोत का उपयोग, वैश्वीकरण में अग्रसर होना, अशिक्षा व निरक्षरता को मिटाना, समय, श्रम व धन की बचत, सुविधानुकूल क्लास लेना, सुगम संसाधन व सुगम तरीका इस प्रक्रिया में उपलब्ध है। गाँव, ढ़ाणियों, कच्चीबस्ती, पिछड़े क्षेत्रों, अभावग्रस्त क्षेत्रों, पहाड़ी क्षेत्रों, दूरदराज के क्षेत्रों, अपंग, दिव्यांग, महिलाओं आदि के लिए वरदान के रूप में कार्य कर सकती है। ऑनलाईन क्लास के नकारात्मक प्रभाव भी है। जैसे–संस्कृति का प्रदूषण, बेरोजगारी का नया सूत्रपात, पश्चिम संस्कृति का प्रचलन, सम्बन्धों का ह्रास, जीवन शैली की विकृति का प्रभाव इन क्लासों के माध्यम से परिलक्षित हो सकता है। अतः ऑनलाईन क्लास का प्रभाव सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों रूपों में पड़ता है। सकारात्मक पक्ष को प्रबल करने हेतु परिवार, समाज, समुदाय तथा सरकार को निगरानी करना व नियम बनाने होंगे, जिससे नकारात्मक पक्षों का प्रभाव विद्यार्थियों में दृष्टिगोचर नहीं हो सके।

सन्दर्भ :

1. रानी अहिल्या. 2016. कम्प्यूटर. लूसेंट पब्लिकेशन, न्यूबाई पास रोड़, आशोचक पटना–800016, पृ. 122–142
2. भार्गव, नीरज. 2012. सूचना प्रौद्योगिकी का आधार–2. राजस्थान राज्य पाठ्य पुस्तक मण्डल 2–2ए, झालानाडूँगरी, जयपुर, पृ. 1
3. सिंह, कर्ण. 2007–08. शैक्षिक तकनीकी एवं प्रबन्ध. गोविन्द प्रकाशन 132/1, जयदेव नगर, राजगढ़, लखीमपुरखीरी, 262701, पृ. 5.10

❑❑❑